HANDOUT

पाठ – 2 राम–लक्ष्मण-परशुराम संवाद (कवि – तुलसीदास)

MODULE – 1

1. नाथ संभुधनु ---------- भृगुकुलकेतु ॥

में चौपाई छन्द का प्रयोग किया गया है।

2. रे नृपबालक ---------- संसार ॥

में दोहा छन्द का प्रयोग किया गया है।

3. रचनागत सौन्दर्य :-

अनुप्रास अलंकार – काह कहिअ किन , करि करिअ ,

बिलगाउ बिहाइ , सकल संसार , हसि-हमरे , मुनि बिनु ,

काज-करिअत , सठ सुनेहि सुभाउ , बालकु बोलि बधौ ,

जड़ जानहि , बाल ब्रह्मचारी , भुजबल भूमि भूप ,बिपुल बार।

उपमा अलंकार – सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।

रूपक अलंकार – भृगुकुलकेतु।

अतिश्योक्ति अलंकार – छुअत टूट।

4. महाकवि तुलसीदास ने शिवधनुष टूटने के प्रसंग में परशुराम जी के

रौद्र रूप को दर्शाया है।

परशुराम जी द्वारा राम को सहत्रबाहु के समान मानना , सामाजिक बहिष्कार की आज्ञा सुनाना उनके रौद्र स्वरूप को दर्शाता है।

5. क्रोधित परशुराम को शान्त करने के प्रयास में स्वयं को उनका दास कहना श्रीराम की विनम्रता को दर्शाता है।

6. लक्ष्मण द्वारा परशुराम जी से तर्क-वितर्क में व्यंग्य की गहराई और वीरता की झलक मिलती है।

7. देवता , ब्राह्मण ,ईश्वर के भक्त तथा गाय पर शूरवीरता न दिखाने वाली बात से रघुकुल की रीति का ज्ञान होता है।

8. काव्यांश में कथात्मक और काव्यांश शैलियों का वर्णन किया गया है जिससे वर्णन में जीवन्तता आ गई है।

राजेन्द्र प्रसाद

टी.जी.टी. - हिन्दी,संस्कृत

प.उ.के.वि. काकरापार